Ques:- किशोरावस्था से आप क्या समझते हैं ? किशोरावस्था की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Ans:- प्रस्तावना:-किशोरावस्था मानव विकास की सबसे विचित्र तथा जटिल अवस्था है! 12 से 18 वर्ष की आयु को विद्वानों ने किशोरावस्था का काल माना हैं। किशोरावस्था 'शैशावस्था' और बाल्यावस्था के बाद मानव विकास की तीसरी अवस्था है। जो कि बाल्यावस्था की समाप्ति के बाद शुरू होती हैं और प्रौढ़ावस्था के पहले समाप्त हो जाती हैं। किशोरावस्था को जीवन का 'बसंत काल' भी कहा जाता है। यह अवस्था तूफान और झंझावत की अवस्था होती है। इसलिए इस अवस्था को जीवन का सबसे कठिन काल के नाम से भी जाना जाता है। किशोवस्था में बालक और बालिकाओं का बहुत ही तेजी से विकास होता है। इस अवस्था मे विभिन्न अंगों का विकास होता है।

जैसे-- मस्तिष्क का विकास, हड्डियों का विकास, लंबाई का विकास, मोटाई का विकास, आवाज मे परिवर्तन, आंतरिक अंगो का विकास एवं अन्य अंगों का विकास इत्यादि इस अवस्था मे होता हैं।

किशोरावस्था का अर्थ एवं परिभाषा:-

किशोरावस्था शद्व अंग्रेजी के 'एडोलसेंस' का हिंदी रूपांतर हैं। 'एडोलसेंस' शद्व लैटिन भाषा के 'एडोलसियर' से बना हैं, जिसका अर्थ है परिपक्वता की तरफ बढ़ना। अतः शाद्विक अर्थ के रूप में हम कह सकते हैं कि किशोरावस्था वह काल है, जो परिपक्वता की तरफ बढ़ता है!

दूसरे शद्वों में हम कर सकते हैं कि किशोरावस्था यौनिक परिपक्वता (Sexual Maturity) से प्रारंभ होती है! और वैधानिक परिपक्वता (Legal Maturity) पर समाप्त हो जाती है! जो उसे परिपक्वता की ओर ले जाये उसे किशोरावस्था कहते है! सामान्य रूप से किशोरावस्था 12 वर्ष की आयु से 18 वर्ष की आयु तक मानी जाती है!

विभिन्न मनोवैज्ञानिको ने अपने तर्क एवं चिंतन के आधार पर किशोरावस्था की निम्लिखित परिभाषा दी है :-

कुल्हन के अनुसार," किशोरावस्था बाल्यकाल तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य अत्यधिक परिवर्तन का संक्रमण काल हैं। "

स्टेनले हॉल के अनुसार, " किशोरोवस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।"

ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन के अनुसार, " किशोरावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अंत में प्रारंभ होता है और प्रौढ़ावस्था के प्रारंभ में समाप्त होता हैं। "

किशोरावस्था की प्रमुख विशेषताएं

किशोरावस्था को दबाव, तनाव एवं तूफान की अवस्था मना गया है इन अवस्थाओं के विशेषताओं को एक शद्व परिवर्तन (change) में व्यक्त किया जाता है!

किशोरावस्था की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

1. शारीरिक विकास (physical Development) :- किशोरावस्था को शारीरिक विकास का सर्वश्रेष्ठ काल माना जाता है! इस अवस्था में लड़कियों का शरीर लड़कों की अपेक्षा ज्यादा विकास होता है। इस अवस्था में अनेक महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन होते हैं जैसे - वजन और लम्बाई बढ़ना, किशोर के आवाज में भारीपन आना और किशोरियों के आवाज में और मृदुलता आना, मांसपेशियों और शारीरिक ढांचे में मजबूती आना, किशोर में दाढ़ी-मुछ आना, किशोरियों में मासिक धर्म का शुरुआत होना, मस्तिष्क का वजन बढ़ना, ज्ञानेंद्रियां का सम्पूर्ण विकास हो जाना।

2. मानसिक विकास (mental Development) :- किशोरावस्था में किशोर के मस्तिष्क का लगभग सभी दिशाओं में विकास होता है! उसमें विशेष रूप से अग्रलिखित मानसिक गुण पाए जाते हैं ! बुद्धि का अधिकतम विकास सोचने समझने और तर्क करने की शक्ति में वृद्धि होती है! किशोरावस्था में व्यक्ति तर्क-वितर्क, चितंन एवं समस्या के समाधान के लिए गहरी सोच प्रकट करना शुरू कर देता है।

3.आत्मसम्मान की भावना (Feeling Of Self Respect) : - मानव विकास की चार अवस्थाएं में से किशोरावस्था में आत्मसम्मान की भावना से ज्यादा प्रबल होती है। उसे छोटी-छोटी बातों से लगता है कि उसका आत्मसम्मान को ठेस पहुंचा है।

जैसे -कोई उसका बात न माना हो, उसके पापा ने शाम में बाहर जाना मन कर दिया हो, उसकी मम्मी ने उसे बोला हो कि ये उम्र नहीं है मोबाइल रखने की। हमें यह समझना चाहिए कि यह एक आम बात है इस अवस्था की और इसलिए उससे अमनोवैज्ञानिक व्यवहार न करके प्रेम और सहानुभूति से पढ़ाना और सिखाना चाहिए।

4.खुद पर ज्यादा भरोसा (Excessive Self Reliance) :-किशोरावस्था में बालक को खुद पर ज्यादा भरोसा होता है। वह अपने माता-पिता या अपने से बड़े लोगों के बातों

को नहीं सुनता और उन्हें अनदेखा कर देता है। उसे लगता है वो सब कुछ कर सकता है और उसके भविष्य के लिए उससे बेहतर कोई नहीं सोच सकता है।

5. घनिष्ठ व्यक्तिगत मित्रता (Fast Friendship) :- किसी समूह का सदस्य होते हुए भी किशोर केवल एक या दो बालकों में घनिष्ठ संबंध रखता है जो उसके परम मित्र होते हैं और जिससे वह अपनी समस्याओं के बारे में स्पष्ट रूप से बातचीत करता है! वेलेंटीन (valentin) का कथन है - घनिष्ठ और व्यक्तिगत मित्रता उत्तर किशोरावस्था की विशेषता है!

6. स्वतंत्रता और विद्रोह की भावना (Feeling Of Freedom And Resistance) :- इस अवस्था में बालक स्वतंत्र रहना चाहता है। वह अपने घर परिवार वालों के सभी बातों को नहीं मानता है। वह किसी प्रकार के रीति-रिवाज और अंधविश्वास को नहीं मानता है। अगर उसके ऊपर कोई गलत इल्जाम लगाता है तो उसका वह विरोध करता है। किशोरावस्था में बालक बड़ा ही स्वाभिमानी होता है।

7. सामाजिक भावना social sentiment :-

किशोरावस्था में किशोर समाज में अपने अस्तित्व को ढूंढने लगता है। उसके अंदर आदर, स्नेह, प्रेम आदि की भावना का विकास होता है। वह समाज में कुछ अच्छा और अलग करने की लालसा रखता है। रॉस के अनुसार, " किशोर समाज के निर्माण व पोषण कार्य के लिए सबसे आगे रहते हैं। "

8.रूचि एवं अभिरूचियों का विकास (development of interests and aptitudes):- किशोरावस्था में रूचि का विकास तेजी से होता है और उनकी रूचि विशिष्ट रूचियों की ओर विकसित हो जाती है। ये रूचियां अनेक प्रकार की हो सकती हैं। इस अवस्था में लड़के तथा लड़कियों के खेल की रूचि भिन्न हो जाती है। लड़के सामूहिक खेल-खेलने में रूचि रखते हैं जबकि लड़कियां नाचने, गाने, ड्रामा व संगीत आदि में अधिक रूचि लेती हैं।

9. काम भावना का विकास- बाल्यावस्था में समलिंगीय प्रेम की भावना प्रबल होती है। बालक बालकों के प्रति तथा बालिकाएँ-बालिकाओं के प्रति आकर्षित होती हैं। किशोरावस्था में इसके विपरीत विषमलिंगीय प्रेम की भावना प्रबल होती है। प्रत्येक लड़का किसी लड़की के सम्पर्क में आना चाहता है और इसी प्रकार लड़कियाँ भी किसी-न-किसी लड़के का सम्पर्क चाहती हैं। प्रेम भावना के साथ-साथ किशोरकाल में काम-भावना का भी विशेष वेग होता है। प्राय: लड़के-लड़कियों में परस्पर काम-सम्बन्धों की स्थापना हो जाती है।

10. जिज्ञासा-प्रवृत्ति में वृद्धि (increased curiosity) :-इस अवस्था में किशोर जिज्ञासा की ओर बड़ी तेजी से बढ़ता है। वह प्रत्येक बात को विश्लेषण के बाद ही

स्वीकार करता है। उसका मस्तिष्क अनेक विचारों की खोज की ओर बढ़ता हैं। जिज्ञासा दार्शनिकता के भाव उत्पन्न करती हैं।

निष्कर्ष- उपयुक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि किशोरावस्था में लड़का और लड़कियां बहुत चंचल स्वभाव के होते हैं। उनमें सामाजिक विकास, स्वप्रेम, अपराध की प्रवृति, विषमलिंगी कामुकता और मानसिक परिवर्तन जैसे गुण पाए जाते हैं। इस अवस्था में बालक और बालिकाओं में काफी परिवर्तन देखने को मिलती है। अगर वह इस अवस्था को सही से पार कर लेते हैं तो उनका जीवन सुखमय हो जाता है।

TECH STUDY